Excessive use of pesticides

श्री विजय पाल सिंह तोमर (उत्तर प्रदेश): माननीय सभापति महोदय, वर्तमान में कीटनाशक दवाओं के अंधाधुंध प्रयोग से हमारे खाने में ज़हर परोसा जा रहा है। जल में भी ज़हर है। यही नहीं इनके कारण पर्यावरण क्षरण और जमीन की उर्वरा शक्ति भी खत्म होती जा रही है। पिछले दो दशक में जिस तेजी के साथ खेती में pesticides का इस्तेमाल हुआ है, उससे बहुत भारी नुकसान हुआ है। पशुओं को जो चारा जाता है, उससे 70 फीसदी गायों की आंतों में बीमारियां हो गई हैं, जो दूध के माध्यम से बच्चों तक जा रही है। इसके कारण लोगों को कैंसर, लीवर खराब होना, किडनी खराब होना इत्यादि तरह-तरह की बीमारियां हो रही हैं।

2007 में एक दवा थी, जिसका इम्पोर्ट करने के लिए रजिस्ट्रेशन जरूरी थी, लेकिन यूपीए की सरकार ने 2007 में उसके technical registration की अनिवार्यता को खत्म कर दिया, जिसके कारण वह दवा लगातार यहां आती चली गई। इस दवा का नाम था 'ग्लाइकोसाइट' और भारत में यह दवा मोनसेंटो राउंडअप के नाम से आई। इस दवा के आने से यवतमाल में 22 किसानों की मौत भी हुई थी। अब इस दवा का रजिस्ट्रेशन जर्मनी की एक कंपनी ने खरीद लिया है और अब यह कंपनी भारत में इस दवा को लगातार सप्लाई कर रही है।

महोदय, मैं आपके माध्यम से यह कहना चाहता हूं कि यूपीए के समय में इस दवा के technical registration की जो अनिवार्यता खत्म कर दी गई थी, उसको फिर से बहाल किया जाए, ताकि यह दवाई, जो अंधाधुंध बाहर से आ रही है, इस पर रोक लग सके। जिस दवाई के तत्वों का हम यहां पर मानक भी पता नहीं कर सकते, वह दवाई खुलेआम आ रही है। खरपतवार को खत्म करने के लिए खेतों में किसान इस दवाई का अंधाधुंध इस्तेमाल कर रहा है। यह दवा हमारे जल को खराब कर रही है, भूमि की उर्वरा शक्ति को खराब कर रही है और नीचे से ऊपर तक, सभी पशु-पक्षी इसके कारण खराब हो रहे हैं। इसके साथ-साथ यह दवा, जो मित्र जीव हैं, उन केंचुओं को भी मार देती है।

महोदय, अत: तुरंत इस दवा पर रोक लगाई जानी अत्यंत आवश्यक है। आज जरूरत इस बात की है कि हमारी कृषि को जैविक कृषि की तरफ बढ़ाया जाए।

श्री राम विचार नेताम (छत्तीसगढ़): सर, मैं माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को सम्बद्ध करता हूं।

MR. CHAIRMAN: Now, Dr. Sonal Mansingh; not here. Dr. Narendra Jadhav.

Need to give classical language status to Marathi language as well as restoration of A.I.R. news bulletin in Marathi

DR. NARENDRA JADHAV (Nominated): Thank you, Mr. Chairman, Sir, for this opportunity. Sir, Marathi language should get the status of classical language. Marathi language has a literary tradition of more than one thousand years. It is spoken by about 90 million people around the world. It is the third most spoken language in India and the 19th

largest spoken language in the world. Marathi language eminently deserves to be called a classical language. The Maharashtra Government has given a proposal and fulfilled all the necessary requirements but still a decision has not been taken.

Sir, through you, I would like to urge the Central Government to expedite this decision and do justice to Marathi-speaking world. Thank you very much.

DR. VIKAS MAHATME (Maharashtra): Sir, I associate myself with the matter raised by Dr. Narendra Jadhav.

SHRI HUSAIN DALWAI (Maharashtra): Sir, I also associate myself with the matter raised by Dr. Narendra Jadhav.

Crisis in Tea Garden area in West Bengal

SHRI P. BHATTACHARYA (West Bengal): Sir, through you, I would like to raise a very serious matter in this House. Tea gardens in West Bengal are facing a serious financial crisis. As you know, not only in West Bengal but also in other parts of the country, tea gardens are the backbone of our economy. But this serious financial crisis has deepened to such an extent that many tea gardens have been closed or have become sick. There is an organization which is called Tea Board doing nothing. There is no public sector. Only the private sector people are running those tea gardens. Sometimes they get loan from the Tea Board but neither do they repay that amount, nor do they utilize that amount for the benefit of tea gardens and for the benefit of tea garden workers. As a result, thousands of tea garden workers are now in a distressed condition. Unfortunately, neither the Government of India has made any intervention in this matter, nor have they said if they are going to take over this thing or how they will win over the financial crisis. All these things have not yet been taken up by the Government of India. I urge upon the Government of India to kindly investigate this matter and take over the closed and sick tea gardens so that se can save the life and property of the workers of the tea gardens.

SHRIMATI VIPLOVE THAKUR (Himachal Pradesh): Sir, I associate myself with the matter raised by the hon. Member.

SHRI DEREK O'BRIEN (West Bengal): Sir, I too associate myself with the matter raised by the hon. Member.

National Status for Kaleswaram Irrigation Project

श्री मोहम्मद अली खान (आंध्र प्रदेश): चेयरमैन साहब, मैं आपकी तवस्सुत से आज तेलंगाना के अन्दर एक अहम प्रोजेक्ट के बारे में आपके द्वारा मरकज़ी सरकार से गुज़ारिश करूंगा। 2008 में